वुमन भास्कर
चंडीगढ़ 19 अप्रैल 2008 शनिवार

...कलकर आया है कि दुनिया भर के शॉपर्स ...ं 500 अरब से लेकर एक खरब तक ...स का प्रयोग करते हैं।

यूनिवर्सिटी ऑफ टो... कि एरोबिक एक्सर... खिसकाया जा सक... लेवल बढ़ाया जा स...

स्वयं संस्था ने सार्वजनिक स्थलों पर विकलांगों, बुजुर्गों, महिलाओं और बच्चों के लिए रैंप बनवाने के लिए छेड़ा अभियान

...ताकि इनकी राह हो आसान

एक हादसे में समीनू जिंदल के शरीर का निचला हिस्सा बेकार हो गया, लेकिन हार नहीं मानी और जिंदगी को जिंदादिली से जिआ। आज वे सफल व्यवसायी के तौर पर अलग पहचान बना चुकी हैं। साथ ही समाजिक कार्यों में पूर्ण रूप से जुड़ी हैं।

नीतू ललांत. चंडीगढ़

11 साल की उम्र में एक हादसे ने समीनू जिंदल की जिंदगी को बदल कर रख दिया। हादसे में उसके शरीर का निचला हिस्सा बेकार हो गया और वे व्हील चेयर तक सिमट कर रह गईं। लेकिन हार न मानने के जज्बे ने उन्हें फिर उठ खड़े होने को प्रेरित किया और अपनी विकलांगता को हराते हुए उन्होंने न केवल अपना बल्कि उनके जैसे अन्य लोगों का सहारा बनने का संकल्प लिया। आज वे जिंदल सॉ लिमिटेड दिल्ली की बतौर प्रबंध निदेशक एक सफल व्यवसायी के तौर पर अपनी पहचान बना चुकी है। वहीं स्वयं संस्था की स्थापना करके समाज भलाई के लिए भी काम कर रही है। यह संस्था विकलांग लोगों को गरिमा पूर्ण जीवन जीने का अधिकार दिलाने के लिए स्थापित की गई है। समीनू के अनुसार यह काम उन्होंने पति इंद्रेश बत्ता द्वारा प्रेरित करने पर आरंभ किया। समीनू दो बच्चों की मां है।

क्या काम करती है स्वयं : इस संस्था का काम बुजुर्ग, गर्भवती महिलाएं, बच्चों और विकलांग लोगों को सार्वजनिक स्थानों पर सुगमता पूर्वक आने जाने की सुविधा दिलाने के लिए काम करना है। उन्होंने हाल ही में कुतुबमीनार में ऐसे लोगों को आने जाने के लिए रैंप की व्यवस्था करवाई है। इससे कुतुबमीनार देखने आए इन लोगों को आसानी होती है। स्वयं के इस अभियान को सरकार आर्थिक सहयोग देती है, संस्था केवल ब्ल्यू प्रिंट बनाकर देती है।

जलियांवाला बाग में रैंप: वर्ल्ड हैरिटेज डे के अवसर पर संस्था स्वयं की ओर से सेक्टर-17 के होटल शिवालिक व्यू में प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित की गई। इस दौरान संस्था की निदेशक आभा नेगी ने बताया कि देश में सार्वजनिक स्थलों को आने वाले समय में सभी के लिए सुगम बनवाने का प्रयास कर रही हैं। वे जलियांवाला बाग में बुजुर्गों और गर्भवती महिलाओं को वहां आने जाने में सुविधा देने के लिए रैंप बनवाने का काम कर रहीं हैं। इसके लिए वे इंडियन टूरिज्म डिपार्टमेंट कॉर्पोरेशन का सहयोग ले रही हैं। आभा नेगी ने बताया कि संस्थां ने चंडीगढ़ में भी सार्वजनिक स्थलों पर असमर्थ लोगों के लिए रैंप बनवाने के लिए प्रशासन को प्रपोजल भेजा है। उन्होंने प्रशासन से आग्रह किया कि जिन सरकारी दफ्तरों में लोगों का आना जाना अधिक होता है। वहां या रैंप बनाए जाएं या बिल्डिंग के निचले हिस्से में शिफ्ट हो जाए।

अपनी चिंता: आभा सॉ लिमिटेड में बतौर जनरल मैनेजर काम कर रही है। उन्होंने मजाक में कहा यह काम वे एक तरह से अपने लिए कर रही हैं, क्योंकि वे भी उम्र के उस मोड़ पर खड़ी होने जा रही हैं, जहां उन्हें ऐसी सुविधा की जरूरत होगी। संस्था से जुड़ी कविता ने कहा जीवन में पैसा सब नहीं होता है। कुछ काम दूसरों के लिए भी करना चाहिए। इसलिए वे स्वयं संस्था से जुड़ीं।

होटल शिवालिक कविता अग्रवाल और आभा नेगी ने शेअर किए अपने अनुभव।